एम.ए.एच.

एम.ए. (इतिहास)

द्वितीय वर्ष

सत्रीय कार्य

2020-2021

एम.ए. इतिहास द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रमों के लिए
जुलाई 2020 और जनवरी 2021 सत्रों के लिए

एम.एच.आई—03	: इतिहास लेखन
एम.एच.आई—06	: भारत में सामाजिक संरचनाओं का युगों से होता हुआ विकास
एम.एच.आई—08	: भारत में पारिस्थितिकी और पर्यावरण का इतिहास
एम.एच.आई.—09	: भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन
एम.एच.आई.—10	: भारत में नगरीकरण
एम.पी.एस.ई—003	: पश्चिमी राजनीतिक चिंतन (प्लेटो से मार्क्स तक)
एम.पी.एस.ई—004	: आधुनिक भारत में सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन

इग्नू जन-जन का विश्वविद्यालय

इतिहास संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110 068

सत्रीय कार्य

2020-2021

प्रिय विद्यार्थी,

आपको प्रत्येक पाठ्यक्रम में एक सत्रीय कार्य करना है। सभी सत्रीय कार्य अनिवार्य हैं। प्रत्येक सत्रीय कार्य पूरे पाठ्यक्रम पर आधारित है।

सत्रीय कार्य के सभी प्रश्नों के उत्तर आप अपने शब्दों में दें। यह अत्यंत आवश्यक है कि प्रश्न का उत्तर जितने शब्दों में देने के लिए कहा जाए उसका उत्तर लगभग उतने ही शब्दों में दीजिए।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद आप इसे अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक के पास जमा करें। सत्रीय कार्य जमा करने के बाद इसकी पावती अवश्य प्राप्त कर लें और इसे अपने पास संभाल कर रख लें। अच्छा हो कि आप अपने सत्रीयकार्यों के उत्तर की फोटोकॉपी भी अपने पास रख लें।

सत्रीयकार्यों के उत्तर जाँचने के बाद जाँचे गये उत्तर अध्ययन केन्द्र से आपको लौटा दिए जाएँगे। आप इसकी माँग अवश्य करें। अध्ययन केन्द्र आपके द्वारा प्राप्त अंक विद्यार्थी पंजीकरण एवं मूल्यांकन प्रभाग, इग्नू, दिल्ली को भेज देगा। इसे आपके ग्रेड कार्ड में शामिल कर लिया जाएगा।

सत्रीय कार्य जमा करना

आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सत्रांत परीक्षा देने से पहले आप सत्रीय कार्य अवश्य जमा करा दें। इसलिए आपको यह सलाह दी जाती है कि आप इसे दी गई अवधि के भीतर पूरा कर लें। एम.ए. द्वितीय वर्ष में आपको कुल मिलाकर 4 सत्रीय कार्य करने हैं। लेकिन अगर आपने MPSE - 003 और MPSE – 004 लिया है तो आपको कुल मिलाकर 5 सत्रीय कार्य करने होंगे। हम यह सलाह देना चाहते हैं कि आप अपने पाठ्यक्रम के अध्ययन के साथ.साथ इसे बारी बारी से पूरा करते चलें और इसी हिसाब से आप उसे जमा भी करते जाएँ ताकि आपको अंक, परामर्शदाता की टिप्पणी और मूल्यांकित सत्रीय कार्य मिलते रहें। सुनियोजित ढंग से योजना बनाकर आप निर्धारित अवधि के भीतर अपने सारे सत्रीय कार्य पूरे कर सकते हैं । सभी सत्रीयकार्यों को जमा करने के लिए अंतिम तारीख का इंतजार नहीं करें क्योकि एक ही साथ सारे सत्रीयकार्यो को हल करना आपके लिए मुश्किल हो जाएगा।

सत्र	सत्रीय कार्य जमा करने की तारीख	सत्रीय कार्य जमा करने का स्थान
जुलाई 2020 सत्र के विद्यार्थियों के लिए	31 मार्च 2021	अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक के पास
जनवरी 2021 सत्र के विद्यार्थियों के लिए	30 सितम्बर 2021	अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक के पास

सवालों का जवाब देने से पहले नीचे दिए गए निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए:

सत्रीय कार्य के लिए निर्देश

इन सत्रीय कार्यों में दो तरह से सवाल पूछे जाएँगे:

1) प्रत्येक विवरणात्मक और निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर लगभग 500 शब्दों में देना होगा और प्रत्येक प्रश्न के लिए 20 अंक निर्धारित होंगे।

2) प्रत्येक लघु श्रेणी प्रश्नों का उत्तर लगभग 250 शब्दों में देना होगा और प्रत्येक प्रश्न के लिए 10 अंक निर्धारित होंगे।

निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखने से आपके लिए उत्तर देना आसान होगा:

क) **नियोजन :** सत्रीय कार्यों को ध्यान से पढ़िए। उन इकाइयों को ध्यान से पढ़िएजिनसे ये सवाल पूछे गए हैं। प्रत्येक सवाल का जवाब देने के लिए कुछ प्रमुख बिन्दुओं को अलग से लिख लें और इन्हें तार्किक ढंग से फिर से व्यवस्थित कर लें।

ख) **चयन :** अपने जवाब की रूपरेखा बनाते समय जरूरी बातों का ही उल्लेख करें। उत्तर को विश्लेषणात्मक बनाएँ। निबंधात्मक प्रश्न में प्रस्तावना और निष्कर्ष अवश्य शामिल करें। प्रस्तावना के अन्तर्गत उत्तर के प्रमुख पक्षों को प्रस्तुत करें और यह बताएँ कि आप इस सवाल का जवाब किस तरह से देने जा रहे हैं। अपने उत्तर के उपसंहार में मुख्य बिन्दुओं का सार भी दें।

उत्तर देते वक्त इस बात का ध्यान रखें कि:

- आपका उत्तर तर्कसंगत और सुसंगत हो,
- वाक्यों और अनुच्छेद के बीच स्पष्ट संबंध हो,
- आपकी शैली, अभिव्यक्ति और प्रस्तुति के साथ-साथ आपके उत्तर भी सही हों,
- यह चेष्टा करें कि आपके उत्तर शब्द सीमा से अधिक न हों।

ग) **प्रस्तुति :** जब आप संतुष्ट हो जाएँ तो सत्रीय कार्यजमा करने से पहले इसे साफ.साफ लिख लें। जिन बिंदुओं पर आप बल देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित भी कर सकते हैं।

घ) **व्याख्या :** इतिहास लेखन में व्याख्या एक निंरतर प्रक्रिया है। यह आपकी योजना और चयन में पहले ही अभिव्यक्त हो चुका है। "हो सकता है", "संभव है", "हो सकता था", आदि जैसी व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ खुद ब खुद लेखन में व्याख्या के तथ्य शामिल कर लेती हैं। यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि इस प्रकार की टिप्पणियों के साथ.साथ आपके उत्तर में इसे पुष्ट करने वाले तथ्य भी शामिल होने चाहिए।

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
एम.एच.आई- 03 इतिहास-लेखन

पाठ्यक्रमकोड : एम.एच.आई.-03
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.-03/
ए.एस.टी./टी.एम.ए./2020-21
पूर्णांक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य दो भागों में बंटा है। आपको हर भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक लगभग 500 शब्दों में) अवश्य देने हैं। कुल मिलाकर आपको पांच प्रश्नों के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-क

1. वस्तुपरकता क्या है? इतिहास लेखन की उस परम्परा की विवेचना कीजिए जो पूर्ण वस्तुपरकता की सम्भावना में विश्वास रखती थी। **20**

2. इतिहास-लेखन की ग्रीक-रोमन परम्पराओं पर एक टिप्पणी लिखिए। **20**

3. मुगल शासन के अन्तर्गत इतिहास-लेखन की इन्डो-फारसी परम्परा की प्रमुख विशेषताओं की विवेचना कीजिए। **20**

4. आप 'सूक्ष्म इतिहास' से क्या समझते है? इतिहास-लेखन की इस परम्परा से संबंधित इतिहासकारों और उनके कार्य की चर्चा कीजिए। **20**

5. इतिहास-लेखन के अनाल स्कूल के संस्थापक किन लोगों को माना जाता है? उनके लेखन की विवेचना कीजिए। **20**

भाग-ख

6. भारत में महिलावादी इतिहास-लेखन की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए। **20**

7. भारतीय इतिहास के सम्प्रदायवादी दृष्टिकोण के मूलभूत तत्वों पर एक टिप्पणी लिखिए। **20**

8. आप 'जनोन्मुखी इतिहास' से क्या समझते हैं? भारतीय इतिहास-लेखन के विशेष संदर्भ में इसकी विवेचना कीजिए। **20**

9. पश्चिम में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के मार्क्सवादी इतिहास-लेखन के विशेष संदर्भ में इसकी विवेचना कीजिए। **20**

10. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए:** **10+10**
    - क) कल्हण और राजतरंगिणी
    - ख) इतिहास में कारण-कार्य सम्बन्ध
    - ग) डी.डी. कोसाम्बी और भारतीय इतिहास-लेखन
    - घ) जाति की औपनिवेशिक धारणा।

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
एमएचआई-06
भारत में विभिन्न युगों के दौरान सामाजिक संरचना का विकास

पाठ्यक्रम कोडः एमएचआई-06

सत्रीय कार्य कोडः एमएचआई-06 एएसटी/टीएमए/2020-21

कुल अंकः 100

नोटः किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखें। सत्रीय कार्य दो भागों क एवं ख में विभाजित है। आपको प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग- क

1. प्राचीन भारत के इतिहास लेखन में व्याख्या की भूमिका पर टिप्पणी कीजिए। 20

2. वैदिक समाजों की सामाजिक संरचना को समझाने में वैदिक ग्रंथ कैसे सहायक हैं? चर्चा कीजिए। 20

3. हडप्पाई सामाजिक संरचना की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए। 20

4. भारतीय सामंतवाद संबंधी विवाद का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। 20

5. प्रारम्भिक मध्य काल में जातियों के प्रचुरोद्भव की चर्चा कीजिए 20

भाग- ख

6. मध्यकाल में जनजातीय समाजों के कृषिकरण की प्रक्रिया की प्रकृति का अवलोकन आप किस प्रकार करेंगे? 20

7. राजपूतों की उत्पत्ति तथा विकास पर बी.डी. चट्टोपाध्याय के दृष्टिकोण की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए। 20

8. प्रायद्वीपीय भारत में बौद्ध धर्म के विस्तार की चर्चा कीजिए। 20

9. भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में महिलाओं की भूमिका पर टिप्पणी कीजिए। 20

10. औपनिवेशिक काल में सामाजिक भेदभाव की प्रकृति पर चर्चा कीएिए। 20

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
एमएचआई-08
भारत में पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण का इतिहास

पाठ्यक्रम कोडः एमएचआई-08
सत्रीय कार्य कोडः एमएचआई-01एएसटी/टीएमए/2020-21
कुल अंकः 100

नोटः किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखें। सत्रीय कार्य दो भागों क एवं ख में विभाजित है। आपको प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग क

1. मानव ने किस प्रकार स्वयं को पर्यावरण के अनुकूल बनाया? चर्चा कीजिए। 20

2. भारत की पारिस्थितिकीय विविधता ने किस प्रकार इसके बसावट के पैटर्न को आकार प्रदान किया? व्याख्या कीजिए। 20

3. औपनिवेशिक तथा उत्तर-औपनिवेशिक काल में भारतीय इतिहासकारों के लेखन ने क्या कोई विशिष्ट प्रगति की है? चर्चा कीजिए। 20

4. प्रारम्भिक मध्य कालीन समाजों के पारिस्थितिकीय सरोकार क्या थे ? चर्चा कीजिए। 20

5. पुरातात्विक तथा साहित्यिक स्त्रोतों द्वारा हम वृहत् पाषाण (megalith) काल के पारिथितिकीय सरोकारों को कैसे समझ सकते हैं? 20

भाग- ख

6. 'जब हम जल को एक पर्यावरणीय स्त्रोत के रूप में दृष्टिपात करते हैं तो क्या जल संबंधी अधिकार एक समस्या के रूप में नजर आते हैं'? चर्चा कीजिए। 20

7. पर्यावरणीय प्रश्न के संदर्भ में प्राकृतिक संरक्षण के महत्व की चर्चा कीजिए। 20

8. क्या औपनिवेशिक कालीन वनों के क्षरण के प्रभाव को बदलने में स्वतंत्र भारत की नीतियाँ सफल रही? चर्चा कीजिए। 20

9. पर्यावरणीय प्रश्न को हल करने में किस प्रकार जैव-विविधता की अवधारणा सहायक है? चर्चा कीजिए। 20

10. क्या पर्यावरणीय स्त्रोतों के पेटेंट से पर्यावरण को बचाया जा सकता है? चर्चा कीजिए। 20

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
एम.एच.आई- 09
भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन

पाठ्यक्रमकोड : एम.एच.आई-09
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई-03/
ए.एस.टी./टी.एम.ए./2020-21
पूर्णांक : 100

नोट : यह सत्रीय कार्य दो भागों में बंटा है। आपको हर भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक लगभग 500 शब्दों में) अवश्य देने हैं। कुल मिलाकर आपको पांच प्रश्नों के उत्तर देने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-क

1. राष्ट्र और राष्ट्रवाद के उदय के बारे में आधुनिकतावादी सिद्धान्तों की विवेचना कीजिए। **20**

2. भारतीय संदर्भ में आर्थिक राष्ट्रवाद की धारणा की व्याख्या कीजिए। **20**

3. खिलाफत आन्दोलन के आरम्भ का वर्णन कीजिए और असहयोग आन्दोलन के साथ इसके सम्बन्ध की चर्चा कीजिए। **20**

4. स्वदेशी आन्दोलन पर एक टिप्पणी लिखिए। **20**

5. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए:** **10+10**
   क) भारतीय राष्ट्रवाद पर केम्ब्रिज स्कूल का दृष्टिकोण
   ख) दांडी यात्रा
   ग) महात्मा गांधी का राजनीतिक दर्शन
   घ) 1937-39 के दौरान कांग्रेस मन्त्रीमण्डलों की उपलब्धियाँ

भाग-ख

6. भारत छोड़ो आन्दोलन की दिशा में ले जाने वाली राजनीतिक गतिविधियों को रेखांकित कीजिए। **20**

7. राष्ट्रवाद का मजदूर वर्गों के साथ संबंध की विवेचना कीजिए। **20**

8. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की जमींदारों के रूबरू क्या स्थिति थी? **20**

9. भारतीय संविधान पर एक टिप्पणी लिखिए। **20**

10. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए:** **10+10**
    क) राष्ट्रवादी और दलित
    ख) कैबिनेट मिशन
    ग) राष्ट्रवादियों और पूंजीपतियों के बीच सम्बन्ध
    घ) सम्प्रदायवाद और भारत-विभाजन में इसकी भूमिका।

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य
एमएचआई-10
भारत में नगरीकरण

पाठ्यक्रम कोडः एमएचआई-10
सत्रीय कार्य कोडः एमएचआई-01एएसटी/टीएमए/2020-21
कुल अंकः 100

नोटः किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखें। सत्रीय कार्य दो भागों क एवं ख में विभाजित है। आपको प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग क

1. नगरीय इतिहास क्या है? नगरीकरण से संबंधित इतिहास लेखन पर संक्षिप्त में वर्णन कीजिए। 20

2. मोहनजोदड़ो नगर की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए। 20

3. प्राचीन भारतीय ग्रंथों में नगरों के चित्रण का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। 20

4. प्रारम्भिक मध्यकाल में एक नगरीय केन्द्र के प्रमुख लक्षण क्या हैं? तल्लआनंदपुर, सियादोनी तथा वेणुग्राम के आधार पर अपने तर्क की व्याख्या कीजिए। 20

5. . निम्न में से किन्हीं दो पर लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिएः **10+10**

(i) लेफेब्र की स्थान (space) की अवधारणा
(ii) प्रारम्भिक भारतीय साहित्य में वन की अवधारणा
(iii) गौड और पांडुआ
(iv) श्रीरंगम का मंदिर नगर

भाग- ख

6. अजमेर-बनारस-पंढरपुर के स्थानिक स्वरूपों का तुलनात्मक विश्लेषण कीजिए। 20

7. सत्रहवीं-अठारवीं शताब्दी में कच्छ-गुजरात क्षेत्र के नगरों का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत कीजिए। 20

8.नगर कॉलोनियों के उदय का वर्णन कीजिए। उसका क्या प्रभाव पड़ा? इसने नगरीय स्थान (space) को किस प्रकार परिवर्तित किया? 20

9. किस प्रकार औपनिवेशिक नगर आधुनिकता के चिन्ह तथा प्रतीक का मूर्त रूप हैं? 20

10. निम्न में से किन्हीं दो पर लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिएः 10 + 10

(i) पितृसत्तात्मक-नौकरशाही (patrinomial-bureaucratic) नगर
(ii) मध्यकालीन दक्खन के औद्योगिक नगर
(iii) गोवा : एक पुर्तगाली नगर
(iv) प्रेसीडेंसी नगर

पश्चिमी राजनीतिक चिंतन (प्लेटो से मार्क्स तक)(एम.पी.एस.ई.-003)
अध्यापक जॉच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः एम.पी.एस.ई.-003
सत्रीय कार्य कोडः एम.पी.एस.ई.-003/एएसटी/टीएमए/2020-21
कुल अंकः 100

प्रत्येक खण्ड से कम से कम दो प्रश्नों के चयन करते हुए, कुल पॉच प्रश्नो के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंको का है।

खण्ड – क

1. राजनीतिक चिंतन, राजनीतिक सिद्धांत और राजनीति दर्शन के मध्य विभेद कीजिए।
2. प्लेटो के राजनीतिक सिद्धान्त के दार्शनिक आधारों की चर्चा करें।
3. अरस्तु की विधि पर एक लेख लिखें।
4. राजनीतिक पश्चिमी चिंतन पर संत ऑगस्टीन का क्या प्रभाव रहा है? परीक्षण करें।
5. मैक्यावली के सरकारों के वर्गीकरण को विस्तार बतायें।

खण्ड – ख

निम्नलिखित पर लगभग 250 शब्दों में लधु टिप्पणी लिखिए।

6. (क) संप्रभु के अधिकारों और दायित्वों पर थॉमस हॉब्बस

   (ख) सामाजिक संविदा और नागरिक समाज पर जॉन लॉक

7. (क) रूसो का सामान्य इच्छा शक्ति का सिद्धान्त

   (ख) एडमण्ड बर्क की समालोचना

8. (क) मानव प्रकृति का इमैनुअल कैंट का पराभौतिक–आदर्शवादी दृष्टिकोण

   (ख) धर्म पर एलैक्स द तॉकवी

9. (क) प्रतिनिधि सरकार पर जे. एस. मिल

   (ख) हेगेल का राज्स का सिद्धान्त

10. (क) मार्क्स का ऐतिहासिक भौतिकवाद

    (ख) मार्क्स की एक साम्यवादी समाज की संकल्पना

आधुनिक भारत में सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन (एम.पी.एस.ई.-004)
अध्यापक जॉच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः एम.पी.एस.ई.-004
सत्रीय कार्य कोडः एम.पी.एस.ई.-004/एएसटी/टीएमए/2020-21
कुल अंकः 100

प्रत्येक खण्ड से कम से कम दो प्रश्नों के चयन करते हुए, कुल पॉच प्रश्नो के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंको का है।

खण्ड – क

1. प्राचीन भारत में राज्य और संप्रभुता की प्रकृति की चर्चा करें।
2. 19वीं शताब्दी में भारत के निर्माण पर एक निबंध लिखें।
3. आरंभिक 19वीं शताब्दी में भारत में राष्ट्रवाद के आगमन का परीक्षण करें।
4. दयानंद सरस्वती के धार्मिक–राजनीतिक विचारों को विस्तार से बतायें।
5. राष्ट्रवादी आंदोलन मे लाल–बाल–पाल के महत्व का वर्णन करें।

खण्ड – ख

निम्नलिखित पर लगभग 250 शब्दों में लधु टिप्पणी लिखिए।

6. (क) राष्ट्रवाद पर स्वामी विवेकानन्द

   (ख) भारत में राजनैतिक नरमपंथियों की श्री अरोबिंदो की समालोचना

7. (क) सामाजिक परिवर्तन पर वी. डी. सावरकर के विचार

   (ख) एम एस गोलवरकर का नकारात्मक और सकारात्मक हिंदुत्व

8. (क) हिंदु–मुस्लिम एकता पर सर सैयद अहमद खान

   (ख) द्रविड़ लामबंदी पर ई. वी. रामास्वामी नायकर

9. (क) गांधी के राजनैतिक परिप्रेक्ष्य के दार्शनिक आधार

   (ख) जवाहरलाल नेहरू का वैज्ञानिक मानवतावाद

10. (क) धर्म और जाति पर डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

    (ख) रवींद्रनाथ टैगोर की राष्ट्रवाद की समालोचना